ज्ञानदीप

(त्रैमासिक सूचना पत्र)

भारतीय रेल सिविल इंजीनियरी संस्थान, पुणे – 411 001

आई. एस. ओ. : 9001 प्रमाणित भारतीय रेल का
प्रथम केंद्रीकृत प्रशिक्षण संस्थान

संस्थान – डी ओ टी (020) 26122271, 26123436, 26123680, 26111554
रेलवे - 55222, 55860, 55862

छात्रावास – डी ओ टी(020) 26130579, 26126816, 26121669
रेलवे - 55980, 55981, 55976

फैक्स : 020-26128677
ई – मेल : mail@iricen.gov.in
टेलीग्राम : रेलपथ
वेब साइट : www.iricen.gov.in

वर्ष - 11 | अंक - 42 | अप्रैल - जून 2007

इस अंक में

1. रेल सप्ताह समारोह 2007
2. आईपीडब्ल्यूई (आई) पुणे चैप्टर का तकनीकी सेमिनार
3. प्रबंध निदेशक, इरकॉन का इरिसेन दौरा
4. प्रशिक्षण प्रबंधकों की बैठक एवं मुख्य सामान्य इंजीनियरों का सेमिनार
5. विशेष उपलब्धि
6. ट्रेनर्स डेवलपमेंट प्रोग्राम
7. राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 95वीं बैठक
8. हिंदी कार्यशाला
9. ''सूचना का अधिकार'' पर प्रस्तुतीकरण
10. विशेष पाठयक्रम
11. स्वागत
12. बधाई / शुभकामनाएं
13. शब्द ज्ञान
14. क्या आप जानते हैं ?
15. कविता
16. सृजन

1 रेल सप्ताह समारोह 2007

भारतीय रेल की बेहतरी के लिए इरिसेन की सेवाएं पुनर्समर्पित करते हुए इरिसेन में 'रेल सप्ताह' मनाया गया। 16 अप्रैल, 07 को समापन समारोह के दौरान एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें इरिसेन के प्रशिक्षु अधिकारियों, संकाय सदस्यों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। तदुपरांत निदेशक महोदय ने भारतीय रेल की प्रगति में रेलवे इंजीनियर्स द्वारा समर्पित भावना से अहम भूमिका निभाने एवं पिछले दो वर्षों में संस्थान द्वारा हासिल की नई उंचाइयों का जिक्र अपने संबोधन में किया। प्रगति पथ पर अग्रसर संस्थान नित नए आयाम हासिल करता रहे, निदेशक महोदय ने इसकी कामना की तथा उच्च कोटि का सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने पर प्रसन्नता व्यक्त की। रेल सप्ताह के अवसर पर निदेशक महोदय ने रेल परिवार के सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएं दीं।



रेल सप्ताह के अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम का दृश्य

2 आईपीडब्ल्यूई (आई) पुणे चैप्टर का तकनीकी सेमिनार

आई पी डब्ल्यू ई (इंडिया), पुणे चैप्टर के तत्वाधान में 'मैसनरी आर्च पुलों पर यू आई सी वर्किंग ग्रुप की गतिविधियों' पर एक तकनीकी सेमिनार का आयोजन किया गया। मैसनरी आर्च पुलों के निर्धारण में संशोधन, अनुरक्षण में आप्टीमाईजेशन एवं इससे संबंधित डाटा बेस विकसित करने के प्रयोजन हेतु यू आई सी द्वारा 14 देशों का एक वर्किंग ग्रुप बनाया गया है। इस ग्रुप में संस्थान के वरिष्ठ प्राध्यापक श्री अजय गोयल ने भारतीय रेल का प्रतिनिधित्व करते हुए पेरिस में आयोजित बैठक में भाग लिया एवं वर्किंग ग्रुप द्वारा अनुशंसित निम्नलिखित पहलुओं को प्रस्तुत किया :-

(क) आर्च ब्रिज के व्यवहार की समझ (ख) विभिन्न पद्धतियों द्वारा आर्च ब्रिज की भार वहन क्षमता का निर्धारण (ग) आर्च ब्रिज की क्षतियों की समझ (घ) आर्च ब्रिज का निरीक्षण एवं अनुरक्षण (च) आर्च ब्रिज का हानि रहित परीक्षण (छ) आर्च ब्रिज की मरम्मत एवं सुधार



आईपीडब्ल्यूई (आई) पुणे चैप्टर द्वारा आयोजित तकनीकी सेमिनार का दृश्य

संरक्षक
शिव कुमार
निदेशक
भा.रे.सि.इं.सं.पुणे

मुख्य संपादक
घनश्याम बंसल
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं प्राध्यापक – पुल

संपादक
अरूणाभा ठाकुर
राजभाषा अधीक्षक

सहयोग
अरूण चांदोलीकर
सह प्राध्यापक
अशोक पोलके रा.भा.स. I/आर.जे.पाल, रा. भा. स.II

3 प्रबंध निदेशक, इरकॉन का इरिसेन दौरा

प्रबंध निदेशक, इरकॉन श्री अंकुश कृष्ण ने दिनांक 07 जून 2007 को संस्थान का दौरा किया । इरकॉन इंजीनियरों के लिए 'प्रोजेक्ट मैनेजमेंट कंसल्टेंट' पाठ्यक्रम के विषयवस्तु पर उन्होंने विस्तारपूर्वक विचार विमर्श किया। उन्होंने संकाय सदस्यों से मुलाकात की एवं संस्थान का निरीक्षण किया तथा किए गए सुधारों की प्रशंसा की । अतिथि पुस्तिका में उनके उद्‌गार से ऐसा ही प्रतीत होता है:-

''इस संस्थान में वापस आना हमेशा महत्वपूर्ण होता है जिसने हमारी रेलवे इंजीनियरी के लिए नींव रखी है।

इस दौरे में एक अलग अनुभव रहा। नई संकल्पनाओं, सुविधाओं एवं अत्याधुनिक विचार का जो मार्ग अपनाया गया है, वह वास्तव में विलक्षण है। मेरा मेंबरशिप कार्ड ज्ञान के द्वार की 'कुंजी' है। जिसके द्वारा मैं इसे कहीं भी किसी भी समय खोल सकता हूं।

यह विकासशील रेलवे इंजीनियरिंग कार्यबल के बारे में एक समान विचार के भागीदार होने का मौका था। निदेशक, श्री शिव कुमार के साथ विचारों का आदान प्रदान करने के उपरांत मैं अत्यधिक आत्मविश्वास के साथ लौटूंगा।''



प्रबंध निदेशक, इरकॉन एवं निदेशक, इरिसेन आपस में विचार विमर्श करते हुए

4 प्रशिक्षण प्रबंधकों की बैठक एवं मुख्य सामान्य इंजीनियरों का सेमिनार

दिनांक 23 से 24 अप्रैल, 07 तक इरिसेन में **'प्रशिक्षण प्रबंधकों की बैठक एवं मु.सा.इंजीनियरों का सेमिनार'** आयोजित किया गया। बैठक के दौरान विभिन्न विषयों अर्थात अधिकारियों के प्रशिक्षण, समूह 'ग' एवं 'घ' कर्मचारी, ठेकेदारों के इंजीनियर्स, ठेका एवं भूमि मदों पर विचार विमर्श किया गया। सेमिनार के दौरान निम्नलिखित प्रस्तुतीकरण दिए गए.- प्राध्यापक/रेलपथ-1 द्वारा 'पाठ्यक्रम कैलेंडर 2007, विभिन्न रेलों द्वारा सीटों का उपयोग, ''अधिकारियों के प्रशिक्षण से संबंधित वेब आधारित रुप रेखा,'' प्राध्यापक/कार्य द्वारा 'ई-लर्निंग', वरि. प्राध्यापक/कार्य द्वारा'' ग्रीन बिल्डिंग - नए इरिसेन भवन पर आधारित केस स्टडी, प्राध्यापक/रेलपथ -3 द्वारा 'प्रोजेक्ट मैनेजमेंट कंसल्टेंसी,' सदस्य/प्लानिंग एंड इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट/आरएलडीए, श्री ए.के.गुप्ता द्वारा, 'रेल लैंड डेवलपमेंट अथॉरिटि', श्री ए.के.गुप्ता, निदे./पीपीपी (ई), रेलवे बोर्ड द्वारा, 'वर्ल्ड क्लास रेलवे स्टेशन,' मेसर्स गोदरेज एंड ब्वॉयस द्वारा, 'मॉड्युलर फर्निचर,' मेसर्स यूनिट्रॉन द्वारा 'रिन्युएबल एनर्जी मेड सिंपल' तथा मेसर्स सेंट गोबेइन द्वारा 'हाई परफॉर्मेंस ग्लास'। सेमिनार के दौरान की गई व्यवस्था की प्रतिभागियों द्वारा सराहना की गई ।

5 विशेष उपलब्धि

संस्थान ने गैर-रेलवे संगठनों के लिए पाठ्यक्रम आयोजित करके एक नए क्षेत्र में कदम बढ़ाया है। इरिसेन में दिनांक 23 से 27 अप्रैल, 07 तक 'प्रोजेक्ट मैनेजमेंट कंसल्टेंट्स' तथा दिनांक 30 अप्रैल से 11 मई तक 'एनटीपीसी इंजीनियरों के लिए ट्रैक एवं ब्रिज मेनटेनेंस' दो विशेष पाठ्यक्रम आयोजित किए गए। पहले पाठ्यक्रम में विभिन्न संगठनों से 26 अधिकारियों ने भाग लिया तथा दूसरे पाठ्यक्रम में एनटीपीसी के 18 प्रतिभागी थे । इन पाठ्यक्रमीं के प्रतिभागियों से कुल रु. 3,80,600/- की फीस अर्जित कर रेलवे की आमदनी में योगदान दिया।

6 ट्रेनर्स डेवलपमेंट प्रोग्राम

- दिनांक 9 से 11 मई, 07 तक फ्रांस में आयोजित '13 वीं यूआईसी मैसनरी आर्च ब्रिजेज प्रोजेक्ट वर्किंग ग्रुप मीटिंग एंड वर्कशॉप ऑन असेसमेंट इंस्पेक्शन एंड मेंटेनेंस ऑफ मैसनरी आर्च ब्रिजेज' के कार्यक्रम में भाग लेने हेतु संस्थान की ओर से श्री ए.के.गोयल वरि.प्राध्यापक/पुल नामित किए गए थे।
- श्री अरुण चांदोलीकर, सह प्राध्यापक, दिनांक 14 से 18 मई, 2007 तक सचिवालय प्रशिक्षण एवं प्रबंधन संस्थान, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 'सूचना का अधिकार' विषय पर ट्रेनर्स डेवलपमेंट प्रोग्राम में उपस्थित हुए थे।
- दिनांक 17 से 19 मई, 2007 तक विज्ञान भवन, इंडियन बिल्डिंग कांग्रेस, नई दिल्ली द्वारा '13 वीं वार्षिक संगोष्ठी एवं इंटीग्रेटेड डेवलपमेंट ऑफ टाउन्स ऐज न्यू ग्रोथ सेंटर्स' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में श्री एम.मलन्ना, सहा.कार्यकारी इंजीनियर-2, ने हिस्सा लिया।

7 राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 95वीं बैठक

दिनांक 31 मार्च 07 को समाप्त तिमाही की राजभाषा कार्यान्वन समिति की 95वीं बैठक दिनांक 20 अप्रैल 07 को आयोजित की गई। स्थापना दिवस का संचालन उपमुराधि द्‌वारा राजभाषा हिंदी में करने की चर्चा बैठक में की गई। राजभाषा में प्रकाशित प्रथम तकनीकी पुस्तक ''कंक्रीट टेक्नॉलजि'' को राजीव गांधी राष्ट्रीय ज्ञान-विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार योजना में शामिल करने हेतु गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, नई दिल्ली भेजा गया। अध्यक्ष ने बताया कि संस्थान को तीन वर्षों के लिए आई एस ओ: 9001-2000 प्रमाणपत्र पुनः प्राप्त हुआ है और इरिसेन को विश्वस्तरीय संस्थान बनाने के प्रयास जारी हैं। राजभाषा के प्रयोग-प्रसार पर संतोष व्यक्त करते हुए बैठक में पधारे मध्य रेल महाप्रबंधक कार्यालय के उप मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री धीरेन्द्र कुमार झा ने हिंदी कुंजीयन का प्रशिक्षण स्थानीय स्तर पर देने तथा हिंदी डिक्टेशन कार्यशाला के आयोजन के संबंध में सुझाव दिए। बैठक में महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए और बैठक सार्थक रही।



राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 95 वीं बैठक का दृश्य

8 हिंदी कार्यशाला

संस्थान में दिनांक 14 से 18 मई, 07 तक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान के पांच कर्मचारियों को नामित किया गया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य कर्मचारियों द्वारा हिंदी का प्रयोग सरलता पूर्वक कैसे किया जाए, इस संबंध में जानकारी देना था। कार्यशाला में व्याख्यान देने के लिए मध्य रेल, मुख्यालय, मुंबई के उप मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं राजभाषा अधिकारी तथा पुणे मंडल के वरि. राजभाषा अधिकारी ने राजभाषा नीति, हिंदी पत्राचार एवं गृह मंत्रालय के वार्षिक कार्यक्रम पर एवं सोलापुर के कार्मिक अधिकारी ने कार्मिक मामले पर व्याख्यान दिए। कंप्यूटर पर हिंदी का अनुप्रयोग सरलतापूर्वक कैसे किया जाए इसकी जानकारी देने हेतु मुंबई के 'प्रकाश इंफोटेक सॉल्यूशन' के श्री जयप्रकाश त्रिपाठी को आमंत्रित किया गया था। कार्यशाला में नामित प्रतिभागियों एवं संस्थान के अन्य कर्मचारियों ने इसमें रूचिपूर्वक हिस्सा लिया और हिंदी कार्यशाला से बहुत लाभान्वित हुए। कार्यशाला पूर्णत: सार्थक सिद्ध हुई। संस्थान में अगली कार्यशाला अगस्त माह में आयोजित की जाएगी।

9 "सूचना का अधिकार" पर प्रस्तुतीकरण

दिनांक 14 से 18 मई, 2007 तक सचिवालय प्रशिक्षण एवं प्रबंधन संस्थान, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 'सूचना का अधिकार' पर प्रशिक्षकों के विकास कार्यक्रम में इरिसेन से श्री अरुण चांदोलीकर, सह प्राध्यापक, उपस्थित हुए थे। श्री चांदोलीकर द्वारा अर्जित ज्ञान के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु संस्थान के ऑडिटोरियम में दिनांक 8 जून, 07 को 'सूचना का अधिकार' पर एक प्रस्तुतीकरण दिया गया। इस प्रस्तुतीकरण में आपने अत्यंत महत्वपूर्ण मुददों पर चर्चा की जैसे: 'सूचना का अधिकार' का अर्थ क्या है और क्यों आवश्यक है ? केंद्रीय सूचना आयोग का कार्य, उसकी शक्तियां, अपील, पारदर्शिता का मानदंड, प्रभाव, निपटान प्रक्रिया इत्यादि के बारे में विस्तार पूर्वक जानकरी दी। इस कार्यक्रम में निदेशक, संकाय अध्यक्ष, संकाय सदस्यगण, प्रशिक्षु अधिकारियों एवं संस्थान के सभी कर्मचारियों ने हिस्सा लिया। इस प्रस्तुतीकरण से प्राप्त महत्वपूर्ण ज्ञान से सभी लाभान्वित हुए।



श्री अरुण चांदोलीकर, सह प्राध्यापक प्रस्तुतीकरण देते हुए

10 विशेष पाठ्यक्रम

- दि. 02/04/07 से 13/04/07 (2 सप्ताह) तक 'रेलपथ मशीन के संचालन' पर।
- दि. 16/04/07 से 20/04/07 (1 सप्ताह) तक 'लंबी वेल्डित रेलों के अनुरक्षण' पर।
- दि. 23/04/07 से 27/04/07 (1 सप्ताह) तक परियोजना प्रबंधन परामर्शदाताओं के लिए।
- दि. 23/04/07 से 27/04/07 (1 सप्ताह) तक 'यांत्रिकीकृत रेलपथ अनुरक्षण' पर।
- दि. 23/04/07 से 25/04/07 (तीन दिन) तक भा.रे.का.से., भा.रे.ले.से. तथा भा.रे.भं.से. के परिवीक्षार्थियों लिए।
- दिनांक 23/04/07 से 27/04/07 (1 सप्ताह) तक 'प्रोजेक्ट मैनेजमेंट कंसल्टेंट्स' पर।
- दिनांक 30/04/07 से 11/05/07 (2 सप्ताह) तक 'एनटीपीसी इंजीनियरों के लिए ट्रैक एवं ब्रिज मेनटेनेंस' पर।
- दि.14/05/07 से 16/05/07 (3 दिन) तक 'यूएसएफडी एवं रेल वेल्ड की खराबियों' पर।
- दि.28/05/07 से 08/06/07 (2 सप्ताह) तक 'प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण (पुल)' पर।
- दि.11/06/07 से 12/06/07 (2 दिन) तक 'पुलों के निरीक्षण' पर।
- दि.11/06/07 से 15/06/07 (1 सप्ताह) तक भा.रे.वि.इंजी. के परिवीक्षार्थियों के लिए जागरुकता पाठ्यक्रम।
- दि.13/06/07 से 15/06/07 (3 दिन) 'पुलों के लिए अस्थायी व्यवस्था' पर।
- दि.18/06/07 से 29/06/07 (2 सप्ताह) 'ठेके एवं विवाचन' पर।

11 स्वागत



श्री विवेक भूषण सूद

● श्री विवेक भूषण सूद भा.रे.इंजी.से.1994 बैच के अधिकारी ने अप्रैल माह में संस्थान में प्राध्यापक रेलपथ -2 का पदभार ग्रहण कर लिया है। इसके पूर्व आप पश्चिम रेलवे में वरिष्ठ मंडल इंजीनियर (उत्तर -पश्चिम) अहमदाबाद के पद पर कार्यरत थे। आपने पश्चिम रेलवे में पुल एवं रेलपथ अनुरक्षण के विभिन्न पदों पर कार्य किया है, जैसे: उप मुख्य इंजी./डिजाईन/चर्चगेट, उप मुख्य इंजी.(पुल) वलसाड एवं वरिष्ठ मंडल इंजी. (उत्तर-पश्चिम) अहमदाबाद। आपको पुलों के रि-गर्डरिंग, रेलपथ एवं अनुरक्षण के विस्तृत क्षेत्र का अनुभव प्राप्त है। वड़ोदरा-अहमदाबाद इलेक्ट्रिफाईड सेक्शन में 06 घंटे के सिंगल ब्लॉक में 18.3 मी. स्पैन के 10 गर्डरों के बदलने की योजना के लिए वर्ष 2001 में आपको महाप्रबंधक पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। संस्थान आपका हार्दिक स्वागत करता है।

● श्री आनंद डी. कांबले, पुत्र स्व. श्री दत्तात्रय कांबले की नियुक्ति अनुकंपा के आधार पर अवर लिपिक के पद पर संस्थान में हुई है। संस्थान आपका हार्दिक स्वागत करता है।

12 बधाई / शुभकामनाएं

अधिकारियों को जन्म दिवस पर हार्दिक बधाई

03 जुलाई - श्री विवेक भूषण सूद, प्राध्यापक - रेलपथ - 2
13 जुलाई - श्री शिव कुमार, निदेशक
23 अगस्त - श्री आर.के.यादव, वरिष्ठ प्राध्यापक रेलपथ
30 सितंबर - श्री प्रवीण कुमार, प्राध्यापक - कंप्यूटर्स

अधिकारियों को विवाह वर्षगांठ पर हार्दिक बधाई

03 जुलाई - श्री एन.सी.शारदा, वरिष्ठ प्राध्यापक - कार्य
12 जुलाई - श्री अतुल अग्रवाल, प्राध्यापक रेलपथ - 3
04 अगस्त - श्री विवेक भूषण सूद, प्राध्यापक - रेलपथ -2

कर्मचारियों को जन्म दिवस पर हार्दिक बधाई

14 जुलाई - श्रीमती नेहा सप्तर्षि, सहा. ग्रंथपाल
20 जुलाई - श्री हरि विश्वकर्मा, कारपेन्टर ग्रेड -1
23 जुलाई - श्री राजू ताराचंद, वरिष्ठ सफाईवाला
11 अगस्त - श्री राजन, सहायक रसोईया
12 अगस्त - श्रीमती शांति सर्वनन, एमआर खलासी
12 अगस्त - श्री रामू तायप्पा, खलासी
21 अगस्त - श्री विनायक ना. सोहोनी, तकनीकी सहायक -पुल
22 अगस्त - श्री लव प्रकाश श्रीवास्तव, प्र.अनु.सहा./खेलकूद अधीक्षक
24 अगस्त - श्री श्रीमती विद्या जम्मा, प्रवर आशुलिपिक
01 सितंबर - श्री कुंडलिक तुकाराम मोरे, खलासी
06 सितंबर - श्री पंढरी मलकप्पा अष्टगे, अवर लिपिक
10 सितंबर - श्री रमेश दादू, माली
12 सितंबर - श्री विजय हीरामन, खलासी
18 सितंबर - श्री प्रवीण रासकर, खलासी
21 सितंबर - श्री शिवशंकर शिंगे, खलासी
29 सितंबर - श्री चंद्रास बठीजा, तकनीकी सहायक कंप्यूटर्स
30 सितंबर - श्रीमती सुनिता देशपांडे, लेखा सहायक

कर्मचारियों को विवाह वर्षगांठ पर हार्दिक बधाई

06 जुलाई - श्री एम. पेची, रसोईया
07 जुलाई - श्री परमेश्वर, खलासी
11 जुलाई - श्रीमती नेहा सप्तर्षि, सहा.ग्रंथपाल
21 अगस्त - श्री पी.विजयन, रसोईया

13 शब्दज्ञान

judicious	विवेकसम्मत
keynote address	आधार व्याख्यान
knowingly	जानबूझकर
lock in period	परिबंधन अवधि
locus standi	अधिस्थिति, सुने जाने का अधिकार
multiple hurdles selection	बहुबाधा चयन
misstatement of facts	तथ्यों की गलतबयानी

14 क्या आप जानते हैं ?

1. वर्ष 2007-08 के दौरान रेल बजट में भारतीय रेलवे का संचालन अनुपात 79.6% का अनुमान लगाया गया है।
2. भारतीय रेल के लिए बनाए जा रहे नए डिजाईन के स्लीपर कोचों में शायिकाओं की संख्या 84 होगी।
3. रेलवे ने वर्ष 2007-08 में 08 नई गरीब रथ एक्सप्रेस रेल गाड़ियां चलाने की योजना बनाई है।
4. सेब फल में सुगंध इथेनॉल के कारण होती है।
5. टाइफायड एवं हिपेटायटिस रोग जल संक्रामक (Water borne) होते हैं।

15 कविता (अंग्रेजी कविता का हिंदी रुपांतरण)

1. जॅक और जिल गए टीले के ऊपर,
लाने पानी पीपे में भरकर
जैक गया गिर, उसका फूट गया सिर
और जिल आई नीचे लुढ़क पुढ़क कर

2. ओ में में करती भूरी भेड़
क्या है (कुछ) अब तुम्हारे पास
जी हां, जी हां, जी हां, जी
कुल तीन बैग हैं मेरे पास
एक मेरे मालिक का है और
एक उसकी लडक़ी के नाम
एक बैग उस लडक़े का
जो रहता मेरे घर के पास

स्व. श्री अशोक अवस्थी
मुख्य परिचालन प्रबंधक,
मध्य रेल द्वारा रचित बाल कविता

16 सृजन

यह एक वास्तविक तथ्य है कि मनुष्य स्वयं को देख नहीं पाता या यूं समझना चाहिए कि देखना नहीं चाहता। उसके नेत्र दूसरों के चरित्र को ही देखते हैं। उसका हृदय दूसरों के दोषों का अनुभव करता है। उसकी वाणी दूसरों के अवगुणों का बढ़ा चढ़ा कर बखान करती है परंतु उसका अपना दोष, उसके अपने अवगुण, उसका मिथ्याभिमान एवं उसके थोथे आत्मगौरव काले आवरण में इस प्रकार लिपटे रहते हैं कि जीवनपर्यत उसे ये दृष्टिगोचर ही नहीं होते। इसीलिए मनुष्य अपने को सर्वगुण संपन्न समझ बैठता है। ऐसे मनुष्य एवं उनका मस्तिष्क अपनी सीमा से परे किसी का सही मूल्य आंकने में असमर्थ होते हैं। इसलिए जितना वे स्वयं द्वारा छले जाते हैं उतना किसी अन्य के द्वारा नहीं।

इसके लिए आत्मविश्लेषण नितांत आवश्यक है। इसके लिए अत्यंत उदारता, सहनशीलता एवं महानता की भी आवश्यकता होती है। आत्मविश्लेषण करना कोई सहज कार्य नहीं है। अपने गुणों, अवगुणों की अनुभूति मनुष्य को सदैव रहती है। अपने दोषों से वह हर पल हर क्षण अवगत रहता है, किंतु अपने दोषों को मानने के लिए तैयार न रहना ही उसकी दुर्बलता होती है और यही उसे आत्मविश्लेषण की क्षमता नहीं दे पाती। उसमें इतनी उदारता और हृदय की विशालता नहीं होती कि वह अपने दोषों को स्वयं देखकर व्यक्त कर सके।

इसके विपरीत पर निंदा या परदोष देखने में अपना नुकसान कुछ नहीं होता उल्टे एक प्रकार का आनंद का अनुभव होता है। वह दूसरों की निंदा कर अपनी आत्मा को दूषित करता रहता है। आत्मविश्लेषण कर अपने दोषों को दूर करने की बजाए वह अपने अहंकार में डूबे रहने में ही आनंद का अनुभव करता रहता है।

- अरुणाभा ठाकुर

भयहीनता अध्यात्म की पहली शर्त है। डरपोक व्यक्ति कभी नैतिक हो ही नहीं सकता। - महात्मा गांधी

घनश्याम बंसल, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं प्राध्यापक, पुल, भारतीय रेल सिविल इंजीनियरी संस्थान, पुणे – 1 द्वारा केवल सीमित निशुल्क वितरण हेतु प्रकाशित एवं मेसर्स एम. आर. ॲण्ड कंपनी, 1552, सदाशिव पेठ, पुणे – 411 030. फोन : 020-65228163 द्वारा मुद्रित (3000 प्रतियां)